सुकवि-संकीर्तन

संपादक
श्रीदुलारेलाल भार्गव
(माधुरी-संपादक)

गंगा-पुस्तकमाला का उन्तीसवाँ पुष्प

सुकवि-संकीर्तन

लेखक

महावीरप्रसाद द्विवेदी

कतिपयनिमेषवर्तिनि जन्मजरामरणविह्वले जगति ।
कल्पान्तकोटिबन्धुः स्फुरति कवीनां यशःप्रसरम् ।

प्रकाशक

गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय

२९-३०, अमीनाबाद-पार्क

लखनऊ

प्रथमावृत्ति

सजिल्द १॥)] सं० १९८१ वि० [सादी १।)

प्रकाशक

श्रीछोटेलाल भार्गव बी० एस्-सी०, एल्-एल्० बी०

गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय

लखनऊ



मुद्रक

श्रीकेसरीदास सेठ

नवलकिशोर-प्रेस

लखनऊ

वक्तव्य

महामान्यवर पं० महावीरप्रसादजी द्विवेदी-लिखित 'सुकवि-संकीर्तन'-पुस्तक के साथ अपने प्रेमी पाठकों की सेवा में उपस्थित होते हुए आज हम परम हर्ष का अनुभव कर रहे हैं। हिंदी-संसार को माननीय द्विवेदीजी का परिचय देने की आवश्यकता नहीं है। आधुनिक हिंदी-साहित्य के निर्माण में आपकी प्रभावशालिनी लेखनी ने बहुत बड़ा काम किया है। अकेले 'सरस्वती'-पत्रिका द्वारा हिंदी की जो स्तुत्य सेवा आपने की है, केवल उसी के कारण साहित्य के इतिहास में आपका नाम सदा स्वर्णाक्षरों में लिखा रहेगा। अस्तु। समय-समय पर आपने सुकवियों, कविता-प्रेमियों और कवि-कोविदों के आश्रयदाताओं के संबंध में जो परिचयात्मक लेख लिखे थे, 'सुकवि-संकीर्तन' में उन्हीं का संग्रह है। आपकी लेखनी की सभी विशेषताएँ इन लेखों में मौजूद हैं। एक ओर सुंदर, सरल, सरस और प्रौढ़ गद्य का चमत्कार है, तो दूसरी ओर लेखक का अपूर्व अध्यवसाय, स्पष्ट मानसिक विकास तथा बहुव्यापक ज्ञान प्रति पृष्ठ में प्रतिबिंबित है। इन मनोरंजक एवं शिक्षा-प्रद लेखों में जो बातें वर्णित हैं, वे कभी पुरानी नहीं हो सकतीं। इन्हें बार-बार पढ़ने पर भी जी नहीं ऊब सकता। हमारा विश्वास है कि अन्य रचनाओं के समान ही द्विवेदीजी के इस 'सुकवि-संकीर्तन' का भी हिंदी-संसार में यथेष्ट आदर होगा। तथास्तु।

१।७।२४ दुलारेलाल भार्गव

निवेदन

जीवन-चरित्र कभी पुराने नहीं होते। जिस उद्देश से वे लिखे जाते हैं, बहुत समय बीत जाने पर भी, उसकी सिद्धि में अंतराय नहीं आता। विद्वानों और महात्माओं के चरित से कुछ-न-कुछ अच्छी शिक्षा अवश्य मिलती है; और समय ऐसी शिक्षा के प्रभाव को मलिन या कम नहीं कर सकता। फिर, संस्मरणीय महाजनों के जीवन-चरित लिखे जाने और प्रकाशित होने पर, यदि इधर-उधर बिखरे पड़े रहें, तो उन्हें प्राप्त करने में कठिनता भी होती है। यही सोचकर कवियों की यह चरित-मालिका यहाँ, इस रूप में, प्रकाशित की जाती है। इसमें जो चरित हैं, वे लिखे जाने के समय के क्रमानुसार रक्खे गए हैं।

"कवि"-शब्द एक विशेष अर्थ में रूढ़ हो गया है। पर कवि वही नहीं, जो कविता करे। संस्कृत-भाषा के कोशकारों ने इस शब्द को विद्वान्मात्र का वाचक माना है। यथा—

विद्वान् विपश्चिद्दोषज्ञः सन्सुधीः कोविदो बुधः।
धीरो मनीषी ज्ञः प्राज्ञः संख्यावान् पंडितः कविः।

इसी से, इस पुस्तक में, कहीं ऐसे भी विद्वानों के चरितों को स्थान दिया गया है, जिन्होंने कविता नहीं लिखी, या लिखी भी है तो बहुत कम।

इस चरित-संग्रह से यदि पाठकों का थोड़ा-सा भी मनोरंजन हो सका, तो भी इसके प्रकाशन का आयास सफल हो जायगा।

जुही कलाँ, कानपुर
१२ अक्टोबर, १९२२

महावीरप्रसाद द्विवेदी

चरित-सूची

